सूर का कूट काव्य

डॉ. शैलजा भट्ट
व्याख्या हिन्दी विभाग
एस.एस.जैन सुबोध स्नात्तकोत्तर, महाविद्यालय,
रामबाग सर्किल, जयपुर, राजस्थान।
पिन कोड – 302004

हिन्दी साहित्य में कवि और भक्त के रूप में सूरदासजी का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। सूरदास जी हिन्दी के मूर्धन्य कूटकाव्यकार है।

'कूट' संस्कृत का एक प्राचीन शब्द है, जिसकी व्युत्पत्ति 'कूट' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है :–

'कूटयति कूटयते वाकूटम'

काव्य के प्रसंग में 'कूट' शब्द का प्रयोग गूढकाव्य के अर्थ में होता है, अर्थात् ऐसी विशिष्ट रचना, जिसमें अर्थ गूढ़ एवं कष्टबोध उक्तियों में छिपा रहता है।

प्राचीनकाल से ही 'कूट' शब्द का प्रयोग होने लगा था, ब्राह्मण ग्रंथों में भी 'कूट' शब्द का प्रयोग मिलता है।

वाचः कूटैनेकपदया बलं विरूज्य।[1]

इसका अर्थ है – शब्दों के छल से तत्काल सेनाओं को रोककर हिन्दी में 'कूट' अथवा 'दृष्टकूट' शब्दों का प्रयोग विशेषतयाः सूरदास के कूटपदों प्रसंग में ही मिलता है।

जो विशेषताएं सूर की अन्य रचनाओं में है, वे ही उनके कूटपदों में भी है। कूटपदों में कृष्ण जीवन की वे घटनाएं चित्रित है, जिनका सूर की अन्तरात्मा पर गहरा प्रभाव पड़ा था ।

विषयों की दृष्टि से कूटपदों का वर्गीकरण इस प्रकार है :–

1. **विनय के पद :–** विनय संबंधी समस्त कूटपद केवल सूरसागर में हैं, और संख्या में बहुत कम है। उनमें माया, जीव और जगत के साथ उसके संबंध का वर्णन है। इस पद में माया को सांसारिक रूप में चित्रित किया गया है।

नारी एक दसौं दिसि विरचित अति सुन्दरी सुहागिनी।
प्रति प्रति सदन पुरूष कंठ बिलसति तद्यपि पियअनुरागिनी।।
तीनि काल सर्वोपरि राजति स्तबन देव मुनि नागिनी।।[2]

एक अति सुन्दरी सुहागिनी नारी है, जो दसों दिशाओं में विवरण करती हैं। यद्यपि वह घर–घर घूमकर प्रत्येक पुरूष का आलिंगन करती है, तथापि वह अपने पति की ही अनुरागिनी है। उसका पति जार है और उसकी स्वच्छन्दता की भी उसे चिन्ता नहीं है। संत लोग उसे वैरागिनी बताते हैं। वह सर्वोपरि विराजमान है और देव, मुनि, नाग आदि सभी पात्र उसका स्तवन करते हैं।

सूर ने इस माया का रूप अत्यन्त उद्वत बतलाया है जो वर्णन करने पर भी अनेक कुमार्गों में विचरण करती है।

कृष्ण स्वयं गोप है और उस गाय पर नियत्रंण करने में पूर्ण समर्थ है। अतः कवि उस गाय के उत्पात से रक्षा के लिए कृष्ण से प्रार्थना करता है :–

माधव जू यह मेरी एक गाय।
अब आजु तैं आपु आगेदई लै आइमैं चराइ।।
अति हरदाई, हरकत हूं, बहुत अमासा जाती ।
फिरति वेद बन अख उखरति सब दिन अरूसबराती।।[3]

अर्थात् हे माधव। मेरी एक गाय है, जिसे मैं आपके आगे कर रहा हूं। इसे आप चराकर ले आइये, यह बहुत अड़ियल है, और मेरे बहुत रोकने पर भी यह अपना मार्ग छोड़कर कुमार्ग पर ही जाती है। यह सदा बेदरूपी मधुर वन को उजाड़ती फिरती रहती है। यह गाय वास्तव में माया है, जो व्यक्ति के वश में कभी नहीं आती वरन् उसे अपने ही नियंत्रण में सदैव रखती है।

आगे के पद में सूरजदास कामासक्त मन को फटकारते हैं और उसे कृष्ण भक्ति की और उन्मुख होने की प्रेरणा देते हैं :–

रे मन समुझि सोचि बिचारी।
भगति बिनु भगवन्त दुर्लभ कहत निगम पुकारि।।[4]

हे मन! समझो, सोचो, विचारो । बिना भागवत भक्ति के ईश्वरका साक्षात्कार दुर्लभ है, वेद भी पुकार–पुकार कर कह रहे हैं :–

रे मन निपट निलल्ज अनीति।
जियत की कहि को चलावै भरत विषयनि प्रीति ।।[5]

2. वात्सल्य के पद :– कृष्ण सूर के आराध्य देव हैं। सूर ने इनके जीवन के दो ही पक्षों का वर्णन किया है – बचपन और यौवन।

निम्न कूट पद में कृष्ण के रूप का वर्णन है :–

सोभा आज भली बन आई।
जलसुत ऊपर हेल बिराजत तापर इन्द्रवधू दरसाई।।
दधिसुत लियौ पियौदाधि सुत मैं यह छवि देखिनंद मुस्काई।
नीरज–सुत बाहन कौ मच्छन सूर–स्याम लै कीर चुगाई।।[6]

अर्थ–आज कृष्ण की अद्भुत शोभा बनी है। कमल पर हंस विराजमान है। जिस पर इंद्रवधु शोभित है। कृष्ण मक्खन को लेकर उदधिसुत चंद्र अर्थात् मुख में रख रहे हैं।

सूरदासजी कहते हैं कि कृष्ण कमलयोनि ब्रह्मा के वाहन का भोजन तोते को चुगा रहे हैं, अर्थात् कृष्ण के नाम में मोती लटक रहा है।

भक्ति और वात्सल्य के पदों में कवि ने कूट–शैली का प्रयोग बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है।

भक्ति और वात्सल्य के पदो के अनन्तर सूरदास ने अपने भक्ति भाव की व्यंजना कृष्ण तथा उसकी प्रियाओं विशेषकर राधा के साथ श्रृंगारी लीलाओं में बड़ी मार्मिकता के साथ की है। इन पदों में प्रेम के उच्चतम आदर्श और सौन्दर्य की अनिर्वचनीय मोहकता की प्रत्यक्ष व्यंजना में कवि ने कूट की अद्भुत शैली का आश्रय लिया है।

श्रृंगारी कूटपदों के प्रमुख वर्ण्य–विषय हैः–

1. दानलीला 2. रूपासक्ति

दानलीला :– इन पदों में गोपियों द्वारा कृष्ण को गोरस (दूध, दही, मक्खन आदि) की भेंट दिये जाने और कृष्ण द्वारा 'गोरस' के श्लेष से इन्द्रिय रस मांगने का वर्णन किया गया हे।

दान लैहौ सब अंगाने कौ।
अतिमद गलित ताल्फुललैं गुरू इन जुग उरज उतंगनि कौ।
खंजन, कंज, मीन, मृग, साबक, भंवर, जवक, भुवअंगनि कौ
कुंदकली बन्धूक बिम्बफल बर ताटंक तरंगनि कौं।।
कोकिल, कीर, कपोत, विसलता घटत, हंस फनिंगनी कौ।।[7]

अर्थ :– मैं तुम्हारे सारे अंगो का दान लूंगा। मदभरे और लालफल से भरे उरोजों का खंजन, कंस, मीन, मृगशावक, भ्रमर का कुंदकली का, बन्धूक और बिम्बफल का ताटंक की तरंग विद्यमान है। कोकिल, शक, कपोत, विसलता, हंस और फनिगण (कबरी) का। सूर कहता है कि इस प्रकार मुस्करा कर बोलते हुए कृष्ण ने अपने शारीरिक सुषमा से करोड़ों कामदेवों को वश में कर लिया ।

रूपासक्ति :– गोपियों का कृष्ण के प्रति आकर्षण और रूपासक्ति भी अनेक पदों में वर्णित हैं, रूपासक्ति को भक्ति का ही एक स्वरूप माना गया है। सूर की कवित्व शक्ति का वास्तविक उद्देश्य कृष्ण के अनुपम मधु रूप का शब्द स्त्रोत उपस्थित करने में ही है।

सखी ब्रज राजत एक धनी।
खेलत हैं वृन्दावन माधौ मदृ सकलखनी।।
जलजुत तासुत तातुस कौसुत तासुत भखवदनी।
मीन सुतासुत तासुत नासा ता पर जलजमनी।।
विद्रुम अधरदसन दुतिदामिनी कोकिल मृदु वचनी।
तिमिपुर सुत भ्रातापितुवाहन लाअरि कह जुवनी।।
पीत जानु पर अहिरिपु राजत टूटत ताहि तनी।
सूरदास प्रभु निरखी हरषि कै बाढी प्रीतिधनी।।[8]

अर्थ :– सुखी ब्रज में एक धनी रहता है, जो वृन्दावन में सब रमणियों के साथ क्रीडा करता है। उसका मुख चन्द्रोपम है, और उसकी शुक समान नासिका में एक मोती है। उनके अधर विद्रुम जैसे है। उसके दांत विद्युत के समान दीप्तिमान है और वचन कोकिल के समान मधुर है, उसकी कमर सिंह की सी है, और

उसके वक्ष रूपी उच्च श्रृंग पर एक ओर विराजमान है, जिसकी पंखे टूटी हुई है। सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण के सुन्दर रूप को देखकर गोपियां उनके प्रति प्रेमाकृष्ट हो कर प्रफुल्लित हो गई।

अलंकारिक शैली की दृष्टि से भी सूरदास जी के कूटपदों का बहुत महत्व है।

इन्होंने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, श्लेष, रूपकातिश्योक्ति, विरोधाभास आदि अलंकारों का प्रयोग कूटता लाने के लिए किया है। इन्होंने यमक का प्रयोग करते हुए सारंग शब्द के अनेक अर्थ बताये हैं :–

सारंग नयन बयन पुनि सारंग सारंग तजु समधनि।

सारंग ऊपरउगल दस सारंग सारंग केलिकराभिमधुपानी।।[9]

अर्थ :– उसके नेत्र कमल जैसे, वाणी कोकिल सी और कटाक्ष बाण जैसे है। सारंग (करकमल) पर सारंग (चन्द्रोपमनख) विद्यमान है। यह मधुपान के आनंद में लीन है।

सूरदासजी ने यमकाश्रित कूटों में सारंग, हरि, चंद्र और कमल का प्रयोग प्रचुरता से किया है। सारंग शब्द कवि को अतिप्रिय है।

रवि, ससि, हथ, गज, गगन, गिरि, केहरि कंज, कुरंग।

चातक, दादुर, दीप, अलि, ये कहिए सारंग।।[10]

सारंग की भांति हरि शब्द के भी अनेक अर्थ लिये है :—[11]

शिव, ब्रह्मा, मेघ, मयूर, कामदेव, अग्नि, इन्द्रावश, सूर्यावया, हरित, पीत, भर्तृहरि और हरण करना आदि।[12]

रूपकातिशयोक्ति पर आश्रित कूटों में उपमान और उपमेयों के प्रयोग में भी सूरदास जी की बहुलता और काव्य कला कौशल का अच्छा वर्णन मिलता है।

खंजन, कंज, मीन, मृगशावक, भंवर, जबरभुज भंगनिकौ।[13] पद में मुख, नेत्र हाथ और पैरों के लिए एक उपमान कमल का ही प्रयोग किया गया है।

हरि कित भए ब्रज के चोर।

तुम्हारे मध्जुप वियोगराधे पवन के झकझौर।।

इक कमल पर धरै गजरिपु इक कमल पर सखिरिपु जोर।

है कमल इक कमल अपर जगी इकटक भोर।।[14]

इस प्रकार शब्दों के चयन और समृद्धि से अभिव्यंजना की कला ओर कवित्व –कौशल में उदात्तता, सशक्तता एवं गरिमा का उदय किया है।

कूट काव्य के इतिहास में सूरदास के पदों को बहुत उच्च स्थान मिला है, क्योंकि उन्होनें न केवल पूर्व संत कवियों द्वारा प्रज्जवलित रहस्यमयी अभिव्यंजना की ज्योति को अश्रुण्ण बनाये रखने का प्रयास किया है, अपितु उनमें काव्य की चिरन्तन ज्योति को दीप्तिमान किया है।

1. भागवत पुराण 6, 5–10
2. सूरसागर पद 138
3. सूरसागर पद – 02
4. सूरसागर पद – 06
5. सूरसागर पद – 07
6. सूरसागर पद – 126
7. सूरसागर पद – 27
8. सूरसागर पद – 135
9. सूरसागर पद – 43
10. संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी मोनियर विलियम्स आप्टे
11. 93, 107, 134
12. संस्कृत इंग्लिश कोश – आप्टै – 635
13. अमरकोश पद – 27
14. अमरकोश – 103